सितम्बर मास में लण्डन तथा मधुबन में चली हुई दादी जानकी जी की क्लासेज

5-9-16

''मैं दिल दिमाग और दृष्टि से प्रभु लीला देख रही हूँ, कैसे उसने सब कुछ करके अपने आपको छिपाया है''

ओम् शान्ति। वन्डर है ड्रामा का, वन्डर है बाबा का? (वन्डर है आपका) मैं बेबी हूँ। मैं क्या जानूँ! टेनीसन रोड से लेकर के सारी स्टोरी सामने आ रही है, यह (ग्लोबल हाउस) कैसे बनाया, किसने बनाया! जब यह ग्लोबल हाउस की जमीन ली थी तब एक रूपया भी नहीं था। पहले इस जगह पर रास्ता भी ठीक नहीं था और यहाँ से पास करना भी अच्छा नहीं लगता था क्योंकि यह जो आस-पास बिल्डिगें देख रहे हैं, उस समय कुछ नहीं था। तो वन्डर है बाबा का, कैसे बाबा ने आप लोगों को इकट्ठा किया है। इस जमीन पर जब काम चलता था तो मैं हर गुरूवार को आकरके मजदूरों को टोली खिलाती थी। पहले यहाँ इन्द्रप्रस्थ बना फिर सुखधाम बना तब रहने के लिये यहाँ आये फिर यह ग्लोबल हाउस बना, फिर डायमण्ड हाउस... तो किसने यह सब खेल रचाया, अपने आप सभी कुछ करके अपना आप छिपाया। उस समय जो भी थे सभी बहुत अच्छे बच्चे वन्डरफुल आलराउण्ड सेवाधारी हैं। उस समय पाउण्ड क्या होता है, पेनी क्या होती है, मुझे पता ही नहीं था, परन्तु अभी मैं समझती हूँ यह एक स्वप्न हो गया है। कहाँ से कहाँ और क्या से क्या हो गया है। बाबा मेरा साथी है, तो ड्रामा को साक्षी होकरके देखना इज़ी हो जाता है। फिर मैं कौन और मेरा कौन, यह अच्छी तरह से समझ में आ जाता है। सभी बहुत पुराने-पुराने बैठे हैं, सब बहुत अच्छे, मीठे हो, प्यारे हो, सच्चे हो। क्या कहूँ, किसको कहूँ, एक एक प्रेजेन्ट समय मेरे दिल में, दिमाग में और दृष्टि में बाबा की लीला देख रही हूँ कि कैसे पैदा हुए, कैसे बड़े हुए...। मुख्य बात है सारे विश्व में कहाँ पर भी ग्लोबल हाउस, डायमण्ड हाउस जैसा कोई स्थान नहीं है। यह प्रभु लीला है। वन्डरफुल लीला है। सभी की सच्ची दिल है, साहेब राज़ी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप। अपने आप सब हुआ है। टेनीसन रोड, बाबा भवन भी कितना अच्छा है। यह कोई नहीं कह सकता है, यह मैंने किया है। बाबा ने किया है। मैं बड़ी खुश हूँ, सभी जो भी बैठे हैं देह, देह के सम्बन्ध से न्यारे हैं। किसी का भी देह के सम्बन्धियों के साथ लगाव, झुकाव, टकराव नहीं है इसलिए सभी को जैसे बाबा ने सम्भाला है, जैसे मुझे सम्भाला है, कभी मुझे यह विचार नहीं आया मैं कल कहाँ से खायेंगी। बाबा बैठा है। गैरंटी है सभी सतयुग में आने वाले हैं। एक एक को देखकरके लगता है। मैं नहीं समझती हूँ कि किसी का अपने लौकिक से लगाव झुकाव है इसलिए भाग्यशाली, सौभाग्यशाली, पदमापदम भाग्यशाली हो। सभी देह सहित देह के सम्बन्धों से न्यारे हैं इसलिए बाबा के प्यारे हैं। (दादी सभी का नाम लेकर बहुत स्नेह दुलार दे रही है)

11-9-16

''खुश वो रहता है जो कभी नाराज नहीं होता, सदा राज़ी है, तो खुशराज़ी रहने के संस्कार यहाँ ही बनाने हैं''

सभी कितने मीठे कितने प्यारे बाबा के बच्चे हैं। हमारा बाबा जितना मीठा प्यारा है, हम भी बाबा के बच्चे हैं। मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा कितना अच्छा है। मैं आत्मा हूँ तो मेरा बाबा परमात्मा है, सर्वशक्ति-वान है, तीसरा फिर यह हमारे बहन भाई हैं। मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, फिर हमारी दृष्टि में यह सब परिवार है। मेरा बाबा है तो शान्ति प्रिय है। हर एक का पार्ट अपना-अपना है। रचना जिसकी इतनी सुन्दर है, तो

वो रचता कैसा होगा। एक दो को देख सब कितने हर्षित हो रहे हैं। संगम के समय में हर्षित रहने का नेचुरल सहज स्वभाव बन गया है। आप एक दो को देखो कितना मजा आता है। एक एक बहन भाई सभी फिकर से फारिग हो ना। सभा में एक दो को दृष्टि देकर के लाइट बनके माइट खींच रहे हैं। लाइट दो प्रकार की है, एक है हल्का, दूसरा है लाइट (प्रकाश स्वरूप), ड्रामा अनुसार संगमयुग पर जो खुशी का अनुभव यहाँ हम कर रहे हैं, यह वायब्रेशन विश्व को जा रहे हैं। एक है वातावरण, दूसरा है वायुमण्डल, तीसरे हैं वायब्रेशन। सहज है ना। अच्छा, सब खुशराज़ी हैं ना। खुश वो रहता है जो राज़ी है, कभी नाराज नहीं होता है। तो सभी के संस्कार खुशराज़ी होने के बने हैं! जब पहले पहले हम जब छोटे थे तो आत्मा का ज्ञान मिला, कि आत्मा मन बुद्धि संस्कार सहित है। मनमनाभव, मामेकम्, सहज राजयोग यह इतना अच्छा लगता है। फिर ज्ञान की गहराई में जाओ तो जी चाहता है कि बाबा मैं तुम्हें देखता ही रहूँ...।

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। डोंट वरी नो प्रॉब्लम। यानी बाबा से ऐसी जो पालना पढ़ाई और प्राप्ति हुई है, उसे देख-देख अपने भाग्य के गीत गाते हैं। अभी हमारा चेहरा चलन बोर्ड का काम करे, ऐसी खुशहाल सम्पूर्ण सम्पन्न स्थिति बनानी है। सेवाधारी का काम ही है त्याग, तपस्या। सिर्फ अन्दर में यह न चले कि हम क्या करें? कैसे करें? यह शब्द नहीं बोलो। सहनशक्ति तभी काम करती है जब समेटने और समाने की शक्ति है, बाकी किसी बात के विस्तार में जाओ। मैं कौन हूँ, मेरा कौन है, यह जो समझ मिली है इसका जिसे अनुभव है वो भाग्यवान है। जहाँ कदम रखेंगे वहाँ कमाई है। हम प्रभु के प्यारे हैं, दुनिया में चारों तरफ चक्कर लगाके देखो। आप जैसे खुशनसीब कोई नहीं हैं इसलिए अभी सब खुशी में डांस करेंगे... गीत: गाओ खुशी के गीत, झूमझूम के नाचो आज, गाओ खुशी के गीत ...अच्छा, ओम् शान्ति।

13-9-16

''मन-वाणी-कर्म शुद्ध और श्रेष्ठ हो तो बाबा की मदद स्वत: मिलती है''

मेरे से कोई ने पूछा कि आप में शक्ति कहाँ से आती है? मैने कहा हम फालतू बातें न सुनते हैं, न सुनाते हैं। न पराई बात, न पुरानी बात। बीती को चितवो नहीं आगे की न रखो आश। जो बात बीती वह बीत गई, अब मुझे क्या करना है? देह, सम्बन्धी से न लगाव है, न झुकाव है, न टकराव है इसलिये एक एक बाबा का बच्चा एक दो न्यारे हैं, दो एक जैसे नहीं हैं। परन्तु अन्दर से हमारी भावना है, एक दो को खुश देख खुशी होती है क्योंकि पता है हरेक का पार्ट अपना है। ऐसा संगठन कितना मीठा है, कितना प्यारा है। सब कैसे खाते हैं, कैसे रहते हैं परन्तु मुझे खुशी यह है कि सभी का खान-पान शुद्ध है। ऐसे है ना! खाना, पहनना, ठण्डा पानी पीना। सफेद कपड़ा खीसा खाली, सिम्पल रहने से इतनी सेवा हो रही है। तो इस संगठन में आने से आप सबको मिलने से शक्ति आती है। सभी के शुभ श्रेष्ठ मन वाणी कर्म अच्छे हैं। अभी हमको क्या करने का है? कराने वाला करा रहा है, करने वाले सब कर रहे हैं। मैं क्या कर रही हूँ, यहाँ बाबा मेरा साथी है, यहाँ साक्षी होकर के हर आत्मा का पार्ट देख-देख हर्षित होते।

कभी कोई कहेगा तुम खुश हो? मैं खुश हूँ ना। बहुत अच्छा है ना। बस, मेरे को खुश देख आप सब खुश होते हो, यह अच्छी बात है। तो अपने मन वाणी कर्म को चेक करते हैं, कोई घड़ी भी कोई मिनट भी खराब नहीं है। मन शान्त, बुद्धि शुद्ध, संस्कार श्रेष्ठ तो सब इज़ी है। जब मन, वाणी, कर्म श्रेष्ठ है तो बहुत मदद है बाबा की क्योंकि बाबा देखता है। कैसे यह भवन बना, बाबा जाने उसका काम जाने। खेल है। वन्डर है। ओम् शान्ति।

14-9-16

''पढ़ाई को कैच करने की आदत बना लो तो पढ़ाई में कमाई है, फिर कभी थकेंगे नहीं''

सभी भाई बहनें मिल करके प्यार से दिल से बोलो - ओम् शान्ति। बहुत अच्छा। क्या अच्छा है? ऐसे बैठ जाना अच्छा है। सबके चेहरे मुस्करा रहे हैं। मैं कौन, मेरा कौन, सिम्पल बात है। सबजेक्ट 4 हैं ज्ञान योग धारणा सेवा। यह टाइम बहुत वैल्युबूल है। संगठन में बैठके न्यारे और प्यारे होकर रहना बहुत अच्छा है। जरा भी चिंतन नहीं है। बाबा की याद में बैठने में बहुत सुख मिलता है। कोई बात याद नहीं आती है। व्यक्तिगत किसी को भी आधार नहीं बनाते कि इनके बिगर नहीं चल सकते। एक बाबा के लिये ही दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया। शुक्रिया क्यों कहूँ, क्योंकि जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो होगा वह और अच्छा होगा। पहले मैं कहती थी सुख है तो शान्ति है, शान्ति है तो सुख है, लेकिन अभी दिखाई पड़ता है कि सुख शान्ति है तभी जब धीरज है। धीरज धर मनुआ। जो कुछ बाबा करा रहा है, दिल कहती यही मुझे करना है। मनमत, परमत, पराई और पुरानी बातों को छोड़ दिल और दिमाग से श्रीमत अनुसार ही समय को सफल करना है। जितना हम शान्ति से समय को सफल करते हैं, तो बाबा भी हमको देख खुश, परिवार भी खुश, मैं भी खुश। एक बाबा के सिवाए और कोई नहीं दिखाई पड़ता है सभी के अन्दर। आप सब बाबा के रत्न हो।

हमेशा बुद्धि बेहद में रहे, जैसे अभी हम सब शान्ति में बैठे हैं, वायब्रेशन कितने पॉवरफुल हैं। मैं समझती हूँ सारा दिन सेवा करते आप सबका मन वाणी कर्म तीनों ही शान्त हैं और शान्ति के व्यवहार से जैसे फरिश्तों की दुनिया हो जाती है। सेवा क्या है, धरती पर पाँव नहीं हैं इसलिये भले कहाँ भी बैठे हैं पर बुद्धि बेहद में है, तो कितनी भी सेवा करते खुशी और सन्तुष्टता बढ़ती रहेगी। असुल यह मेरा घर है, यह मेरा कमरा है, यह मेरा, मेरा .. अब यह बुद्धि में नहीं हो क्योंकि समय थोड़ा है। हम बच्चों का यह बड़ा भाग्य है, समय सफल करना, न फालतू सुनना न सुनाना। संगम पर बाबा ने हर एक को अपना बच्चा बनाया है। जैसे मैं खुश हूँ वैसे तुम भी खुश, इसलिए साक्षी होकर के देखती हूँ। हर समय दिल से निकलता है शुक्रिया बाबा आपका। कल क्या होगा? अच्छा ही होगा। आज क्या हुआ? अच्छा हुआ। यह बहुत भाग्य की बात है।

अभी दुनिया देख रही है कि यह ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियाँ क्या कर रहे हैं? सारी मुरली ध्यान से पढ़ो, सार क्या है! पढ़ाई क्या है, पढ़ाने वाला कौन है। जब पढ़ाने वाला बुद्धि में आता है तो पढ़ाई को कैच करने की बहुत अच्छी आदत नेचुरल हो जाती है। पढ़ाई क्या है? अभी के लिये पढ़ाई है पर भविष्य के लिये कमाई है इसलिये पढ़ाई में थकते नहीं हैं, चित्त में भी किसी घड़ी थकावट न आवे। भले कोई भी कारण हो, कोई पुरानी बीमारी अगर फिर से पैदा हो जाती है तो थकावट ले आती है। दिल से शुक्रिया क्यों नहीं निकलता है क्योंकि थकावट है। थकें क्यों? भले अभी देवता नहीं हैं, ब्राह्मण हैं। सतयुग में देवता होंगे लेकिन उस समय भी हमको इतना खुशी नहीं होगी जितना आज खुशी है। सतयुग में ऐसा मजा थोड़ेही आयेगा।

पहले साकार बाबा के होते सौ भी नहीं थे, गिनती के थे, अभी हजारों तो क्या लाखों हो गये। मैं समझती हूँ, पूरे संसार को सन्देश देने का टाइम पूरा हो गया। बस, अभी तो मैं कौन हूँ, मेरा कौन है वो देख लो, अनुभव करो तो बहुत खुशी रहेगी। हमको देख करके सबको यह पता पड़े कि क्या बनना है

और उसके लिये क्या करना है! जितना डीप जाओ, उतना अच्छे अनुभव होते हैं। अन्दर जाते अनुभव होता है यह मुझ मूर्ति (आत्मा) का मन्दिर (शरीर) है। मन्दिर में मूर्ति होती है। मन्दिर में मूर्ति अगर न हो तो उसे मन्दिर नहीं कहा जायेगा। मन्दिर में तो मूर्ति का दर्शन करके ही प्रसन्न हो जाते हैं। अभी हम मन अन्दर मूर्ति बन रहे हैं। शान्त, प्रेम, सच्चाई के सिवाए और कुछ भी नहीं है। यह कर्मेन्द्रियां सेवा करने के लिये हैं। संगमयुग में बाबा ने यही सिखाया है। ऐसी सेवा जो अभी करते हैं, वह फिर कभी नहीं करेंगे। अभी जो करता है सो पाता है।

तीन बारी ओम् शान्ति का जो हमारा नियम बना हुआ है, पहला मैं कौन, दूसरा मेरा कौन। मैं कौन हूँ तो आत्मा हूँ, देह से न्यारी हूँ माना देह द्वारा कर्म करते भी न्यारी हूँ। कर्म तो इस देह द्वारा करना ही है पर कर्म योग दोनों हो। योग से पुराने विकर्म विनाश हो रहे हैं और श्रेष्ठ कर्म करने की लाइफ है। बाबा ने अच्छी युक्ति बताई है - जैसा कर्म मैं करूँगी मुझे देख और करेंगे। मैं दिखाने के लिये नहीं करती हूँ परन्तु यह कर्म बड़े बलवान हैं, कर्मों से ही प्रैक्टिकल लाइफ में बहुत बल मिला है क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप साथ में है। करावनहार करा रहा है, करने वाले का भाग्य है।

15-9-16

''आपसी सम्बन्धों में पवित्र दृष्टि महासुखकारी है, संकल्प व स्वप्न में अशुद्धि, अपवित्रता न हो''

साइलेंस में बैठे कमाई जमा हो रही है। संगठन में जब हर एक शान्ति में बैठते हैं तो कितना अच्छा वायुमण्डल बनता है। न सुनना, न सुनाना। सारे दिन में कितना टाइम होता है जो न सुनते हैं, न सुनाते हैं। दिल कहता है कुछ बोलूँ तो क्या बोलूँ? यहाँ अन्दर आते ही हरेक का दिल कहता है, अच्छा है। ऑखें खुली हैं, मुख शान्त है। दृष्टि की लेन-देन बहुत अच्छी है। क्या बात करूँ... दृष्टि से ही अच्छी मुलाकात हो रही है, अच्छा लगता है।

सतयुग की आदि कलियुग के अन्त का यह जो संगम है, शान्त रहने का, खुश होने का, सारे कल्प में ऐसी शान्ति नहीं मिलती है। संगमयुग का ज्ञान मिलने से पता चलता है कि यह समय है घर जाने का, घर जाके घर में रहने का नहीं है फिर सतयुग में आना है। सतयुग में राजाई पद चाहिए, प्रजा पद नहीं चाहिए। इस संगमयुग में छोटा-बड़ा, बाल-बूढ़ा कोई भी है, बाबा आया ही है ले जाने के लिये। पहले पता नहीं था, अभी हर एक के लिए यह राजयोग इज़ी है। न कोई मन्त्र, न माला... कुछ नहीं है।

नष्टोमोहा, अनासक्त वृत्ति हो, कुछ चाहिए नहीं तब कहेंगे मोह नष्ट है। काम महा शत्रु है इसलिये गृहस्थ में रहते पवित्र रहना है। पवित्रता से योग लग जायेगा। जो सब बहन भाई बैठे हैं जब से बाबा मिला तब से पवित्रता के बल से लाइफ है। काम नहीं, तो क्रोध भी नहीं। काम महाशत्रु है इसलिये इसे हम जीतेंगे पर जरा सा भी क्रोध है, या कोई एक भी विकार लोभ मोह है तो पाँचों ही होंगे। आप सभी भाग्यशाली, सौभाग्यशाली हैं जो पाँचों विकारों को जीत लिया, सभी ने जीता है? एक दो को नहीं देखो। जो समझते हैं हमारी तो विकारों पर जीत हो गयी, वह हाथ उठाओ। इतनी सब पवित्र आत्मायें, कितनी अच्छी, बाबा को प्यारी लगती हैं। एक दो को भी प्यारे लगते हैं। चाहे दिन हो चाहे रात हो, स्वप्न वा संकल्प में अशुद्धि, अपवित्रता नहीं है तो कहेंगे अच्छा है। और किसी को कुछ मदद न करें लेकिन यह करें। ऐसी पवित्र दृष्टि महासुखकारी होती है। सतयुग में भी ऐसी दृष्टि की लेन-देन नहीं होगी। आपसी सम्बन्धों में अगर मोह भी

है तो अन्दर ही अन्दर बड़ा नुकसान हो जाता है। देह सम्बन्ध में मोहजीत राजा की कहानी अच्छी है। भले काम को जीता परन्तु मोह है, वह भी बाबा को याद करने नहीं देता है। तो हरेक को सच्चा पुरुषार्थ करके अपने आपको मोहजीत रखना है। लोभ भी नहीं, क्या करेंगे, कहाँ रखेंगे इसलिए सिम्पल रहना, एवररेडी बनना। दुनिया में हैं पर न्यारे बहुत हैं इसलिये फ्री हैं। जब से बाबा के बने हैं, बाबा ने अपना बनाके मोहजीत बना दिया है। किसी का किसी में भी मोह है तो याद का जो बल मिलता है वो मिस है। मोह माया है, थोड़ा भी मोह है तो अपनी तरफ खींचता है इसलिये समझदार भाई बहनें मोहजीत बनने से बड़े अच्छे सहजयोगी हैं। यहाँ तो एक बाबा के सिवाए किसी को और कुछ याद नहीं आता है। कितना अच्छा संगमयुग में स्वयं परमात्मा बाप हमारे लिये ब्रह्माबाबा के तन में आकरके अपनी पहचान देता है। सारे कल्प में कोई भी आत्मा के तन में परमात्मा आवे और हम उसकी दृष्टि से निहाल हो जाए, इतने मीठे बन जाएं, यह केवल संगमयुग पर ही हम सबका भाग्य है। अच्छा।

17-9-16

''पाचों विकारों को जीतने वाले एक मिसाल बनो, सहनशक्ति, सन्तुष्ट रहने की शक्ति और पवित्रता की शक्ति सदा साथ रखो''

तीन बारी की ओम् शान्ति में सब कुछ आ जाता है। मैं कौन, मेरा कौन और यह सब कौन? मैं एक आत्मा हूँ, वो परमात्मा है, वो मेरा है यह भले कहे हमारा है, पर मैं कहती हूँ मेरा है। और यह सब मेरे बहन भाई हैं, अच्छा है। इस बारी 7 सप्ताह यहाँ रही हूँ अच्छी रिजल्ट है। बहुतों में जो परिवर्तन जरूरी है वो यह ऑखें देख रही हैं, बुद्धि समझ रही है। 3 शक्तियाँ तो हमेशा साथ-साथ चाहिए 1- सहनशक्ति, थोड़ी बात में नाराज़ कभी नहीं होना। राज़ी रहना, खुश रहना, खुश रहना राज़ी रहना। 2- सदा सन्तुष्ट रहना, यह गुण बहुत अच्छा है। किसी ने प्रूछा तुम कहती हो बीती को चितवो नहीं, आगे की न रखो आश। जो बीती बात है, अभी क्या करना है अच्छा करो। देह से न्यारे सम्बन्ध में रहते भी न्यारे हैं, कोई में मोह नहीं है तब कहेंगे अच्छी रिजल्ट। 3- पवित्रता का बल बहुत चाहिए। संगठन में रहते हुए भी दुनिया में रहते हुए भी न्यारा कमल फूल समान। गुलाब के फूल भी अच्छे हैं, गुलाब के फूलों में भी एक जैसे नहीं हैं। हरेक फूल में फर्क है पर गुलाब का है। खुशबू अच्छी है। दो फूल भी एक जैसे नहीं होते पर कांटे जरुर होते हैं। तो उन कांटों को न देख फूल ले आते हैं। कोई कोई फूलों में कांटे नहीं होते हैं तो यह सारा फूलों का बगीचा है। यह खुशबू सारे विश्व में जा रही है। बैठे यहाँ हैं, बगीचा यहाँ है और खुशबू चारों तरफ जा रही है। सबको क्लास के लिये अच्छा कदर है। दुनिया वाले तो सिर्फ भक्ति में दुःख में भगवान को याद करेंगे। हम ऐसे नहीं करते हैं, कभी कोई ऐसे कहते हैं क्या ओ बाबा! नहीं। मेरा बाबा कहेंगे। हम जब याद करते हैं ना तो बाबा भी खुश होता है, उसकी याद में रहते हैं ना तो वो खुश होता है। मेरा उनसे क्यों प्यार हुआ है? गोद बिठाके गले लगाया, पहले गोद बिठाया फिर मेरा साथी बन गया, वाह क्या समझा है! काम नहीं, क्रोध नहीं... अभी भी किसी को गुस्सा आता है क्या? हाथ उठाओ। आता है गुस्सा? कभी भी नहीं। सब अच्छे हैं। सबके गुण देखने से मेरे में सब गुण आ जाते हैं। सब अच्छे हैं। इतना प्यार करेगा कौन! सतयुग, त्रेता, द्वापर कलियुग सारे चक्र में देखो कोई नहीं करेगा। अभी थोड़े समय के बाद हम सतयुग में राज्य करने के लिये जायेंगे, कितना वन्डरफुल ड्रामा है। हरेक का अपना पार्ट है। यह बहुत अच्छी बात है। सब कितने न्यारे प्यारे अच्छे हैं, ऐसे बहुत हैं। तो देह में, सम्बन्ध में रहते हुए बाबा के हैं,

बाबा हमारा है। मैं समझती हूँ पाँचों विकारों को जीतने के लिये हरेक मिसाल है क्योंकि कई ऐसे परिवार हैं जो पता ही नहीं चलता है इनका कोई लौकिक सम्बन्ध है, कब आते, कब जाते सब अपना अपना अच्छा पार्ट बजाते रहते हैं। यहाँ रहते मैंने यह सब नोट किया है, सारे विश्व में जितने बाबा के बच्चे हैं, सब सतयुग में आने वाले हैं। जरा भी क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के संस्कारों से छूट गये क्योंकि अभी सब ब्राह्मण है। ब्रह्मा मुख वंशावली हैं। अच्छा।

18-9-16

''अपने आपको ऐसा लायक बना लो जो आपको देखकर दूसरों को पुरुषार्थ करने का उमंग-उत्साह आ जाए''

संगमयुग पर बाबा ने कितना अच्छा बगीचा बनाया है। सब बड़े अच्छे लगते हैं। बाबा हम बच्चों को देखके खुश, हम बाबा को देखके खुश। तो अपने को देखो मैं कौन, मेरा कौन का नशा चढ़ा है, निश्चय बुद्धि हैं? नशे सभी में नुकसान है परन्तु इस निश्चय के नशे में फायदा बहुत है। चाहे भाई, चाहे बहनें सबकी वह पहले माँ है फिर बाप भी है। कभी यह हुआ वही माँ हो, वही बाप हो, यह यहाँ माँ भी है तो बाप भी है, फिर शिक्षक भी है, तो रक्षक भी है। शिक्षाओं को पालन करने के लिये बड़ा रक्षक है। सतगुरू भी है, श्रीमत पर चलते हैं। मनमत, परमत नहीं।

बाबा हम सबको अपने साथ ले जाने के लिए आया है क्योंकि वह वहाँ का रहने वाला है ना। हमको भी वहाँ ले जाने के लिये आया है। फिर स्वर्ग की राजाई लेने में अभी साथ दे रहा है। निश्चय बुद्धि विजयंती हैं, निश्चित भावी बनी पड़ी है। हम एक बल एक भरोसे से जैसे बाबा चला रहा है वैसे चल रहे हैं। व्यक्तिगत हर आत्मा कहेगी बाबा मेरा है। और बाबा फिर सब बच्चों को ऐसी व्यक्तिगत फीलिंग देता है मैं तेरा हूँ। बाबा तू मेरा बाबा है, बाबा कहता है मैं तेरा बाप हूँ। दिल से पूछो बाबा अन्दर ही अन्दर गुप्त कितनी शक्ति दे रहा है। हम तो बदलेंगे दुनिया बदल जायेगी यह गैरंटी है और मुझे बड़ी खुशी है, यह सभी जो बाबा के बच्चे हैं ना, इतना अपने आपको लायक बना रहे हैं, जो आपको देख औरों को भी अच्छा पुरुषार्थ करने में उत्साह उमंग आ जायेगा। कोई कारण से भी भारीपन न हो। गुप्त प्रैक्टिस करो, जो भी टाइम मिलता है देखो मैं हल्की हूँ! जैसे लाइट के साथ हम लाइट तो हो रहे हैं पर माइट भी आ रही है। अभी मैं बड़ी सहज युक्ति बताती हूँ लाइट रहो तो माइट आपेही आती है। और माइट लाइट बनाती है, लाइट माइट बना देती है, ऐसे है? लाइट रहना भाग्य है। हमेशा मैं बताती हूँ लाइट के दो अर्थ हैं, हल्का भी है, रोशनी भी है। दोनों एक ही टाइम में अनुभव हों। भारी होने की कोई जरूरत नहीं है। कोई भी बात सोचने की जरूरत नहीं है। राइट क्या है, राँग क्या है इतनी बुद्धि बाबा ने अच्छी दी है। जो राइट बात है वो ऑटोमेटिक मेरे से होगी, जो राइट नहीं है वो नहीं होगी। उसमें सेफ्टी है। बाबा मेरा है ना, फॉलो करना है सिर्फ जैसे वो करता है वैसे करना है। वो ऐसा अच्छा है जो मैं चाहूँ बाबा ऐसी बात है तो वो कराता जरुर है। अच्छा। (लण्डन से विदाई)

मधुबन में चले हुए दादी जानकी जी की क्लासेज वा प्रवचन

22-9-16

''कर्म ऐसे करो जो कराने वाला खुश हो जाये, जो दिल के सच्चे हैं, दिमाग में कोई टेन्शन नहीं, अटेन्शन है, वह सदा खुशी में रहते हैं''

(मेडिकल कॉन्फ्रेंस में आये हुए मेहमानों को सम्बोधन)

इस आत्मा को दुआ और दवा चला रही है। दुआ कौनसी है? सबकी दुआयें हैं, दुआ बाप की है मेरे भाइयों की है। दुआयें भी उनको मिलती हैं जो कभी किसी से नाराज़ नहीं होते हैं, न किसी को नाराज़ करते हैं न होते हैं। आप सबको देख करके मैं तो खुश राज़ी हूँ, ऐसे आप सब भी राज़ी खुशी हो? मुझे ब्रह्माकुमारी बनें 80 वर्ष हो गये हैं। ब्रह्माबाबा से इतना अच्छा सीखी, मन कहाँ मेरा भटके नहीं। मन की सच्चाई सफाई सादगी के कारण ही आप सबका दर्शन करने का भाग्य मिला है। हर आत्मा का पार्ट अच्छा है, हरेक एक जैसे नहीं होते हैं पर हमारी नज़रों में सब अच्छे हैं। सच्चाई है तो सुख में खुशी में नाचते हैं तब कहते सच तो बिठो नच। तो कर्म ऐसे करो जो भगवान मेरे से राज़ी रहे। सच्ची दिल से साहेब को राज़ी कर सकते हैं। इज़ी राजयोग है तो संस्कार सदा राज़ी रहने के बना लो। सबको देखो बड़े अच्छे प्रभु के प्यारे हैं, सब एक दो से न्यारे हैं। यह सब परमात्मा के बच्चे हैं।

मुझे कहा कि इन्हों को ब्लैसिंग दो, मैं ब्लैसिंग देती नहीं हूँ, हरेक अपना कार्य अच्छी तरह से सच्ची दिल से करने से बहुत भाग्यवान बनेंगे, यही ब्लैसिंग है। जैसे हम बाप के बच्चे हैं और सच्चे होने के कारण बड़े सुखी हैं। देख रहे हो ना, मैं कैसे चल रही हूँ। इसी ब्लैसिंग से मैं चल रही हूँ ना।
जो खुश राज़ी हैं वो हाथ उठाओ। सभी खुश हैं तो राज़ी हैं। मैं तो शान्ति की बातें करेगी, अभी आप सभी को ऐसे कर्म करना है जो इन लक्ष्मी-नारायण जैसा बनना है। इन जैसे कर्म करना है क्योंकि कर्म बड़े बलवान हैं परन्तु परमात्मा सर्वशक्तिवान मेरा साथी है। इस आत्मा का साथी कौन है? जानते हो ना मेरा साथी कौन है! परमात्मा मेरा बाप है, वही मेरा सबकुछ है। आप सब भी उस एक के हो। तो आप सब भी खुश हो ना। खुश हो तो हाथ उठाओ। सदैव खुशी बनी रहे उसके लिये ऐसे कर्म करो जो कराने वाला भी खुश हो जाये, राज़ी हो जाये। जो दिल के सच्चे हैं, दिमाग में कोई टेन्शन नहीं है, अटेन्शन है, टेन्शन नहीं है। इसमें सच्ची बात यह है कि सच्चे बनो। संकल्प में दृढ़ता है क्योंकि मैं एक की हूँ, यह सब भी एक के हैं। हम सभी भले एक दो से न्यारे हैं, पर प्रभु के प्यारे हैं, यह भाग्य हमारा है। प्रभु का प्यारा बनना है तो देह, देह के सम्बन्ध, दुनिया से न्यारे रहो। दो एक जैसे नहीं होते हैं, कोई हर्जा नहीं है पर मेरे बाप के बच्चे हैं ना।

हमारी जीवन ऐसी हो जो पाँच विकार हमारे पास आ ही नहीं आ सकते। काम तो महा शत्रु है, क्रोध भी किस पर करूं, क्यों करूँ, पर लोभ भी नुकसानकारक है, यह मेरी चीज़ है, मेरा है। कपड़े सफेद है जेब खाली है फिर भी पूरे विश्व का चक्कर लगाया होगा। जिस भी शहर में जायेंगे, न लोभ न मोह क्योंकि यह नुकसानकारक है। लोभ कहेगा यह चीज़ होनी चाहिए और मोह कहेगा इसके बिगर मैं कैसे चलूँ? यह भी बड़ा नुकसानकारक है। अहंकार की भी तो अन्त नहीं। अहंकार मिथ्या है। जो भी कर्म करो ना कराने वाला कौन है, वो याद हो क्योंकि समय ऐसा है, ऐसे कर्म करना है जो दुनिया में भले कितना भी पाप होवे, भगवान को कहते हैं इस पाप की दुनिया से और कहीं दूर ले चल... कहाँ जायेंगे?

निर्वाणधाम में जहाँ वाणी नहीं है। तो मुस्कराता हुआ चेहरा उसका होगा जिसमें लोभ मोह नहीं है। नष्टोमोहा, स्मृर्तिलब्धा यह स्मृति रहे मैं कौन हूँ, किसकी हूँ? मेरा सर्वशक्तिवान बाप ऐसी शक्ति देता है, वन्डरफुल। आज भी कोई पूछ रहा था कि तेरे में शक्ति कहाँ से आती है? शक्ति आती नहीं है, पर शक्ति को मेरे में विश्वास बहुत है तो बैठ जाती है और इतने सबके सब काम कराती है क्योंकि मैं तो अनपढ़ी हूँ, स्कूल में तीन साल पढ़ी हूँ। उसमें दो सबजेक्ट अच्छी लगी थी एक अर्थमेटिक दूसरा थोड़ी इंगलिश और आप देखो कितने पढ़े लिखे हो, ऐसों से मिलूँ, यह तो कमाल है ना।

जरा भी किसी में मोह होगा, बहन में हो, भाई में हो या पति में हो या पत्नि में हो - तो वह दु:खी करता रहेगा इसलिए देह से न्यारे और प्रभु के प्यारे बनो, यह मेरी भावना है। आप सभी दिल से इसे स्वीकार करो तो अच्छा है। मैं जब जहाँ भी जाती हूँ तो कोई भी भाषा को जानता हो या नहीं जानता हो, पर भारतवासी समझके ऐसे नमस्ते करते हैं। फिर मैं क्या करूँ, मैं भी हाथ से ऐसे करती हूँ क्योंकि उस एक ने हमको अपना बनाया है तो मैं बहुत खुश राज़ी हूँ। वह एक ऐसा है इतनी शक्ति देता है, जो शक्ति मेरी खर्च नहीं होती है, बल्कि बढ़ती है। खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं। तो चिंता कभी नहीं करती हूँ। किसकी करें? क्या चाहिए? सब कुछ ठीक है क्योंकि अभी जो समय है ना, अच्छे कर्म करने का है। इसमें मूँझने वा कुछ पूछने की आदत न हो, नहीं तो बिचारे हो जायेंगे क्योंकि जो बात अन्दर स्मृति में है, वो दृष्टि से दिखाई पड़ती है। अच्छा समझदार किसको कहेंगे? क्योंकि तन को भले बीमारी कुछ होती है पर मन अच्छा है, तो ठीक है। सहनशक्ति, समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति यह तीन शक्तियाँ बहुत अच्छा काम करती हैं। सहनशक्ति है तो कहेंगे क्या बड़ी बात है, क्या हुआ अच्छा है। कोई बात के विस्तार में नहीं जाना है। सार क्या है, मैं कौन, मेरा कौन, यह है सार, उसका संस्कार बना रहे हैं। हम कौन किसके हैं? तो लाइट हैं एवरीथिंग राइट है। हम लाइट रहते हैं तो वो कराने वाला करा रहा है, हम भाग्यवान हैं। हमने कुछ नहीं किया है, न कुछ करते हैं। कराने वाला स्वयं भगवान ऐसा है जो मैं उसको अपना समझती हूँ, उसे भी खुशी है बहुत। भगवान मेरा साथी है तो क्या करेगा काज़ी। डर नहीं, निर्भय, निर्वैर हैं। और मैंने भगवान को बोल दिया है कि मैं मरुं तो कैसे मरूँ? जीऊं तो कैसे जीऊं? अभी जीती हूँ तो कैसे... मरेंगी तो भी ऐसे... ऑ, ऊं... करके नहीं... डॉक्टरों को बुलाके नहीं, डॉक्टर मुझे देखे तो वो खुश हो जाये। इतनी खुशी हो, कभी कोई बात की चिंता नहीं करना। चिंता ताकि कीजिए जो अनहोनी हो, हुआ ही पड़ा है। यह अच्छा यह नहीं अच्छा, ऐसे नहीं सब अच्छा है, सब अच्छे हैं इसलिये यहाँ सभी जो भी आते हैं दिलखुश मिठाई खिलाई जाती है। क्योंकि यहाँ एक दो को देख दिल खुश है, दिमाग ठण्डा है, स्वभाव सरल है। ऐसी सबकी जीवन यात्रा सफल हो, इसके लिये ऐसा कोई कर्म न करूँ क्योंकि जो कर्म मैं करेंगी मुझे देख और करेंगे। तो बड़ा सम्भालना होता है। कर्म ऐसे करो जो आप मेरे को देख खुश, मैं आपको देख खुश। इज़ी है ना। क्या करेंगे? यह सब कौन है? प्रभु के प्यारे हैं, कैसे खींच करके सब जगह के यहाँ आते हैं। तो ऐसी सिम्पल बातें ध्यान पर रखो जो आपका सैम्पल देख करके सब खुश हो जायें। सिम्पल रहने का सैम्पुल बनना है।

भगवान की दिल मेरे लिये तख्त है और भगवान की दृष्टि महासुखकारी है। भगवान की स्मृति है तो कोई बात याद नहीं रहती है, जो बीती सो बीती। कल क्या होगा, कराने वाला करा रहा है। तो सब दर्शन करके प्रसन्न हो गये ना! कोई प्रश्न तो नहीं है ना! अच्छा।

28-9-16

''ज्ञान का जितना मनन चिंतन करो उतना योग अच्छा लगता है, योग में मेहनत नहीं है स्वतः खींच होती है''

तीन बारी ओम् शान्ति के बाद थैंक्यू क्यों कहा? मेरा बाबा इतना अच्छा है जो हमारे को गोद बिठाके, गले लगाके, नयनों में पलकों में बिठा दिया। कोई कोई बहन या भाई ऐसे हैं जो मुझे लगता है वो यहाँ बैठे हैं या विदेश में हैं उनको खींच होती है यहाँ आकर बैठने की। और मेरा भी हाल यही है, कभी सोचती हूँ कॉन्फ्रेंस हॉल कहाँ है? कहाँ जाना है? डायमण्ड हॉल कहाँ है? क्योंकि बाबा ने ऐसा गुह्य ज्ञान अच्छी तरह से हमारे बुद्धि में डाला है, साकार की भी भासना है, अव्यक्त की भी भासना है। अगर अभी मैं कहूँ मुझे निराकार से मिलना है तो कहाँ मिलेंगी और मैं कहूँ मुझे साकार से मिलना है, तो मैं कहाँ मिलेंगी! या कहेंगी मुझे सूक्ष्म में मिलना है तो कहाँ मिलेंगी। इतना स्पष्ट अच्छी समझानी बाबा ने दी है जो संगम पर इस भासना में रहना और जो नया भी कोई मिले, वह ज्ञान भले पीछे सुने, पर भावना से वो भासना ले सकते हैं।

यह नॉलेज ऐसी अच्छी बाबा ने दी है जो राजयोग, सहजयोग है। मेहनत वाला नहीं है। बाबा अव्यक्त हो गया तो भी अपना काम नहीं छोड़ता है। यहाँ बहुत थोड़े हैं जिन्होंने साकार में बाबा को देखा था। लेकिन अभी भी साकार अपनी भासना दे रहा है। मेरा बाबा, मेरे बच्चे – कितना प्यारा सम्बन्ध है। मैं समझती हूँ सारे कल्प का आधार अभी के सम्बन्ध से है। मैंने भक्ति सिर्फ पुकारने के लिये नहीं की है, पर भगवान से मिलूँ इसके लिये की है। तो जब शिवबाबा ब्रह्मा तन में आया, तब से उसी घड़ी से पुकारना बंद हो गया। शान्त में बैठना या शान्ति में बगीचे में जाकर पैदल करना, मुख से राम राम नहीं। माला मन्त्र नहीं कुछ नहीं। जब बाबा से मिलन का अनुभव हुआ तो शान्त में, भले मन्दिर सामने है पर उसके अन्दर नहीं जायेंगे। जब बॉम्बे में सेवा पर थी, तब की बात है मैं बाहर बैठी रहती तो लोग कहते थे तुम अन्दर जाके भक्ति क्यों नहीं करती हो। पर मैं सोचती थी कि मुझे ऐसा दर्शनीय मूर्त बनना है, वो कैसे बनूं, उसके लिये मैं यहाँ बैठती हूँ, फिर ज्ञान देना शुरू कर देती क्योंकि उन दिनों बॉम्बे में सेन्टर नहीं थे, तो वरली में पैदल जाके वहाँ थोड़ा ज्ञान सुनाके आती थी। इससे कई भाई बहनें आते थे, ज्ञान सुनते थे, मन्दिर अन्दर था, मैं बाहर बैठती थी। लौकिक घर भी बहुत छोटा था तो मैं समुन्द्र किनारे पर बैठ जाती थी, वहीं बैठके योग भी करती थी और ज्ञान भी सुनाती थी। सागर के किनारे बैठ इस झाड़ के बीज का चिंतन मंथन करने बैठ जाती थी। कोई-कोई आकरके वहाँ बैठ जाते थे। उन दिनों यह झाड़ का चित्र तैयार हो गया था। इस झाड़ का बीज कौन है? यह झाड़ कैसे पैदा होता है? वृद्धि को कैसे पाता है? अन्त में फिर बीज आ जाता है। वन्डरफुल। चक्र का, झाड़ का, सीढ़ी का जो बाबा का डायरेक्ट ज्ञान सुना हुआ है, जो मुरली पढ़ते हैं, तो वो घड़ी बहुत अच्छी रीति से याद आता है।

उस समय बाबा संगम का ज्ञान पूरा नहीं देता था। चक्र को देखो या झाड़ को देखो या सीढ़ी को देखो। सीढ़ी चढ़ना कितनी मेहनत होती है। यह सीढ़ी चढ़ने में मेहनत नहीं हुई है। धीरे-धीरे ऊपर से उतरते नीचे आ गये। चढ़े कैसे? वन्डरफुल। बाबा ने कहा था यह ज्ञान मंथन करने से दिल कहता है औरों को भी यह बताऊं। अगर मंथन नहीं किया है तो क्या बतायेंगे। तो ज्ञान मनन करके कैसे अपनी लाइफ में लाना है, यह भी सीखना है। जितना मंथन करो उतना योग अच्छा लगेगा। योग की मेहनत नहीं है, देने

वाला दाता है, अपने आप खींचता है। कौन हैं जिसको याद में रहने की मेहनत नहीं है, पर खींच होती है। कितना बारी ऑख खुलेगी या स्वप्नों में भी यह सारा ज्ञान बुद्धि में आयेगा। ज्ञान है बड़ा सिम्पल, पर ज्ञान सुनते सुनाते जीवन बनाने में सहज कर दिया है। यह परिवार फिर कब मिलेगा!

कल सब तरफ चक्र लगाने गये थे, भण्डारे में बर्तनों का विभाग देखा, सब डिपार्टमेंट देखी क्या प्रभु की लीला चल रही है। बनाने वालों की, सम्भालने वालों की कमाल है, इतने बड़े-बड़े पतीले थे। खिलाने वाले की भी कमाल है। संगमयुग पर जो अभी हमारा यह परिवार का अनुभव है, सुख है वो मिस न कर दें। सतयुग में क्या करेंगे? कलियुग में भी अच्छा है, बच गये हैं। कलियुग की कोई भी बात मन बुद्धि संस्कार में नहीं है। मन शान्त, बुद्धि शुद्ध, संस्कार श्रेष्ठ बन गये हैं। कितने अच्छे हैं हमारे बहन भाई। जब कहते हैं हमारे बहन भाई हैं तो आपका और कौन बहन भाई है? बाबा सिर्फ यह नहीं कहता है कि तुम मेरे हो, पर हम कहते हैं बाबा तुम मेरे हो, तो बाबा यह कौन है? सब बाबा के हैं, बाबा के हैं तो हमारे भी हैं। कईयों के स्वप्नों में भी मैं आती हूँ? स्वप्नों में भी कोई नहीं छोड़ता है। घड़ी-घड़ी ऑख खुलती है, कोई न कोई दृश्य सामने आता है, तो संगमयुग की बहुत महिमा है। आप सारा चक्र लगाओ, साक्षी होकर के देखना, अभी सारे विश्व में बाबा ने अपनी सेवायें कराई है। बाबा अभी उल्हना नहीं देता है, पहले पहले बाबा ने कहा था यह ज्ञान सारे विश्व में देना है। भगवान क्या सुनाता है? क्या बनाता है? यह पढ़ाई है, यूनिवर्सिटी है। अभी सबको पता चल रहा है। अच्छा, ओम् शान्ति।

29-9-16

'' दिल से सेवा करते न्यारेपन का अनुभव करो, सेवा में सुस्ती वा अलबेलापन न हो''

मैं कौन, मेरा कौन इसकी किसको प्रैक्टिस है? मैं आत्मा, मेरा बाबा सिम्पल बात है। सारे चक्र में 84 जन्म हैं, कितनी बातें बाबा ने ऐसी स्पष्ट समझाई है, हरेक क्या याद करेंगे! सिम्पल बात है। जब मैं कौन, मेरा कौन कहा तो कितना नशा चढ़ता है! सभी बोलो मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और शुक्रिया बाबा। एक दो को नहीं देखो पर खुद को देखो, वाह बाबा वाह! जब वाह बाबा कहते हैं तो कितना अच्छा लगता है। इंगलिश में व्हाई व्हाई (क्यों क्यों) कहने से मुस्कराना नहीं होता है। मैं कौन हूँ! जब मैं आत्मा कहती हूँ, तो नम्रता, सत्यता स्वत: आ जाती है। चेहरा भी बड़ा लाइट (हल्का) और माइट सम्पन्न नेचरल हो जाता है। इसके लिए टेन्शन के आगे ए रखो तो अटेन्शन से टेन्शन फ्री हो जायेंगे। कोई भी प्रकार का जरा भी व्यर्थ चिंतन न हो। बाकी सभी नशों में है नुकसान, यह जो नशा है ना बाबा हमको कैसे नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बना देता है।

आज भी मुरली में बाबा ने कहा जिनको ज्ञान अच्छा समझ में आता है, वह दूसरों को भी अच्छा समझा सकता है। जिसको भी समझायेगा वो खुश होगा और कभी भूलेगा नहीं। तो सारे दिन में कम से कम टोटल एक दो घण्टा ज्ञान कौन सुनाता है? हाथ उठाओ। इतना स्पष्ट ज्ञान बाबा ने दिया है, इसी ज्ञान से बाबा हमको राजाई दे रहा है। गैरंटी है सतयुग में मैं राज्य पद पायेंगी। आप क्या समझते हैं? प्रजा में तो नहीं आयेंगे ना!

अभी तो यह दुनिया पराई है, हमारी नहीं है। कितनी वृद्धि हो गयी है, सारे विश्व की आत्माओं को देखो अनगिनत आत्मायें हैं। सतयुग में थोड़ी होंगी। यह तो पक्का निश्चय है ना कि हम सतयुग में आने वाली आत्मायें हैं। जैसे कोई बैरिस्ट्री पढ़ता है तो उसे याद रहेगा कि मैं बैरिस्टर बनने वाला हूँ। हम क्या

बनेंगे? बहुत मेहनत नहीं है पर निश्चय पक्का चाहिए। निश्चयबुद्धि विजयंती, निश्चित भावी बनी पड़ी है, परन्तु हमको स्वयं को पहचानना है। कौन हैं उठते-बैठते, चलते-फिरते जो भी सेवा है वो दिल से करते पर न्यारेपन का अनुभव अच्छा है? सुस्ती नहीं है, अलबेलापन नहीं है। हमको राजयोग से राज्य पद पाना है। हमारा खाना-पीना, रहना कितना सिम्पल है, लगता है ना संगमयुग है, सतयुग में ऐसी ड्रेस थोड़ेही पहनेंगे।

बाबा ने इतनी आत्माओं में से चुनकरके हमें बहुत-बहुत प्यार दिया है। तो यह भी पक्का है कि राज्य पद पाना है। शिवबाबा ब्रह्मा तन का आधार लेकरके, हमको साथ में परमधाम में ले जाने के लिये कितनी अच्छी दृष्टि देता है। परमधाम को शान्तिधाम, निर्वाणधाम भी कहते हैं, वहाँ वाणी नहीं है। उस निर्वाणधाम में बाबा कैसे ले जा रहा है। कलियुग के अन्त में ऊपर खाली हो जायेगा, ऊपर में जो भी आत्मायें हैं, वो सब नीचे आ जायेंगी फिर ऊपर जाना शुरू करेंगे। बाबा ने इतनी अच्छी पढ़ाई पढ़ाया है, जो बहुत लम्बी चौड़ी नहीं है, जब मै मेरा कहो तो बुद्धि ऊपर चली जाती है। बॉडी-कॉन्सेस नहीं रहती, सोल-कॉन्सेस हो जाते हैं। अच्छा।

30-9-16

''कोई भी पेशेन्ट की प्यार से सेवा करो तो दुआयें बहुत मिलती हैं, वह दुआयें हमारे लिए भी दवा का काम करती हैं'' (नर्सेज कॉन्फ्रेंस में)

मैं भी पेशेंट के साथ बहुत समय रही हूँ, उन्हें सम्भाला भी है। कराची में बाबा ने हमको यह सेवा करने का भाग्य दिया। जब ग्लोबल हॉस्पिटल बन रहा था तो दादी ने कहा मदद करो तब से लेके आज दिन तक जानकी फाउण्डेशन से गुप्त मदद आती रहती है। इससे जो दुआ मिलती है वो दवा का काम करती है। मुझे 1974 में विदेश सेवा में जाने के लिये प्रेरणा मिली।

इज़ी राजयोग है। मैं कौन? मेरा कौन? जब मैं कौन कहती हूँ तो मैं आत्मा हूँ, आत्मा को परमात्मा का बहुत अच्छा एक फरमान वा श्रीमत है कि पेशेंट है तो पेशेंस रखो। कभी कोई की तबियत में कुछ गड़बड़ हो तो क्या करेंगी? सच्चाई और प्रेम की शक्ति है तो कोई दवा आदि की भी जरूरत नहीं है। जब मैं नर्स की सेवा करती थी, तो बहुत कुछ सीखने को मिलता था। एक बार एक पेशेन्ट को बहुत दर्द था तो मैंने बाबा को जाकर कहा कि बाबा उसको यहाँ बड़ा दर्द है, तो बाबा ने कहा तुम्हारी शक्ल ऐसी क्यों हुई है! दर्द उसको है शक्ल तुम्हारी ऐसी क्यों हो गयी है? तो अगर पेशेन्ट की हम प्यार से सच्चाई से दिल से सेवा करते हैं, तो उनके दिल से मेरे लिये दुआयें निकलती हैं। मुझे दुआयें बहुत मिली हैं, आज दिन तक भी दुआयें चला रही हैं। बाकी अभी मैं क्या करूँ, कैसे करूँ... यह जो शब्द हैं वह बीमारी को बढ़ाते हैं। मीठे, प्यारे बाबा ने हम बच्चों की ऐसी पालना दी है, ऐसी पढ़ाई पढ़ाई है जो वन्डरफुल है। दिल सच्ची है, दिमाग ठण्डा है, बहुत नहीं चलता है और दृष्टि में सच्चाई सफाई सादगी है। सच्चाई में बहुत शक्ति है और सफाई देखो सबको अच्छी लगती है और सादगी, सिम्पल रहने में बहुत सुख है। तो आज आप सबको यहाँ देखके मुझे बड़ी खुशी हुई, हम मिल करके ऐसी ज्ञान की रूहरिहान करेंगे। बाबा ने हमको अपनी दृष्टि से सदा ऐसे रखा है। ओ.के. अच्छा, ओम् शान्ति।